क्रांतिकारी आन्दोलन (Revolutionary Movement) (1)

(Introduction) **भूमिका** → सूरत के कांग्रेस अधिवेशन के बाद सरकार ने राजनीतिक अशांति को दबाने के लिए दमनकारी नीति को अपनाया और भारतीयों पर अनेक प्रकार के प्रतिबन्ध लगा दिये, जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय राजनीतिक क्षेत्र में एक नवीन धारा का जन्म हुआ जिसे आतंकवादी या क्रांतिकारी (Terrorist or Revolutionary) आन्दोलन कहते हैं। अंग्रेज शासकों ने इस आन्दोलन के नेताओं को आतंकवादी, हत्यारे, अराजकतावादी आदि नामों से पुकारा। इसमें सन्देह नहीं कि क्रांतिकारी बम, बन्दूक, पिस्तौल, डकैती का सहारा लेते थे, वे अंग्रेजों में आतंक फैलाना चाहते थे लेकिन वास्तव में वे न तो हत्यारे थे न आतंकवादी और न डाकू। उनका उद्देश्य अत्याचारी शासकों के मन में अत्याचारों के विरुद्ध आतंक उत्पन्न करना था। क्रांतिकारी विदेशी शासन, सभ्यता, संस्कृति एवं भाषा के कट्टर विरोधी थे और इन्हें भारत से बलपूर्वक उखाड़ फेंकना चाहते थे। वे भारतीय सैनिकों को भी विदेशी शासकों के विरुद्ध शस्त्र उठाने की प्रेरणा देते थे। इसके लिए गुप्त तथा खुले संगठन स्थापित किये गये फलतः तोड़-फोड़, हत्या तथा बम बारी के काम शुरू हो गये और धीरे-धीरे आतंकवादी आन्दोलन ने जोर पकड़ लिया था, देश के विभिन्न भागों में फैल गया। वी.डी. सावरकर, चापेकर बन्धु, वारिन्द्रकुमार घोष, भूपेन्द्रनाथ दत्त, श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल इत्यादि राष्ट्रीय क्रांतिकारी आन्दोलन के कट्टर समर्थक थे।

क्रांतिकारियों की विचारधारा और कार्यप्रणाली :- क्रांतिकारी वे व्यक्ति थे जिनका उद्देश्य ब्रिटिश शासन को जन विरोध के माध्यम से उखाड़ फेंकना था। यह गुट गुप्त व्यक्तिगत हत्याओं, यूरोपियनों की हत्याओं, सरकारी सम्पत्ति की बर्बादी और तोड़-फोड़ में विश्वास न रखकर सशस्त्र सेनाओं में राष्ट्रवादिता का संचार करते हुए इसे अंग्रेजों के विरुद्ध भड़काने में विश्वास रखता था। अपने उद्देश्य के लिए यह गुरिल्ला युद्ध का भी समर्थक बने। क्रांतिकारियों का स्पष्ट कथन था कि अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए हथियारों की आवश्यकता पड़ेगी और इन हथियारों की प्राप्ति के लिए वे उन देशों पर निर्भर हो सकते थे जो ब्रिटेन के शत्रु हैं। इसलिए क्रांतिकारी भारत में एक सुसंगठित और व्यवस्थित विद्रोह के पक्ष में थे। उनका तर्क था कि जो उद्देश्य अनेक युक्तियुक्त तथा नैतिक बातों के प्रभाव से प्राप्त नहीं हो सकता वह गोली और बम के प्रयोग से हो सकता है। उनका संदेश था 'तलवार हाथ में लो और सरकार को मिटा दो।'

क्रांतिकारी विचारधारा के समर्थक वारीन्द्र कुमार घोष (अरविन्द घोष के छोटे भाई और भूपेन्द्र नाथ दत्त (स्वामी विवेकानन्द के छोटे भाई) थे। इन दोनों ने युगान्तर तथा 'संध्या' नामक क्रांतिकारी पत्रों द्वारा शासन विरोधी आतंकवाद का प्रचार किया। इन्हें विदेशी शासन विरोधी आतंकवाद का अग्रदूत कहा जाता है।

क्रांतिकारी आन्दोलन की **कार्य प्रणाली को 6 भागों में बाँटा गया है** :-

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

(i) पत्रों की सहायता से प्रचार द्वारा शिक्षित भारतीयों के मन एवं मस्तिष्क में दासता के प्रति घृणा पैदा की जाये।

(ii) बेकारी और भूख के भय को दूर किया जाय। देश प्रेम व स्वतंत्रता के लिए संगीत, नाटक एवं साहित्य द्वारा निडर बनाकर उनमें मातृभूमि और स्वतंत्रता का प्रेम भरना।

(iii) वन्दे मातरम के जुलूसों, बहिष्कार, आन्दोलन और स्वदेशी सभाओं में सरकार का ध्यान रखा जाये।

(iv) युवकों को संगठित करके उन्हें शारीरिक व्यायाम, हथियारों का उपयोग और नेताओं की आज्ञा का कठोर पालन सिखाया जाये।

(v) हथियार खरीदकर देश में लाये जायें या उन्हें देश में बनाया जाये।

(vi) क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए धन डकैतियों द्वारा एकत्रित किया जाय।

क्रांतिकारी आन्दोलन के उदय के कारण :- क्रांतिकारी आन्दोलन के उदय के लगभग वही सब कारण हैं जो उग्रवादी आन्दोलन के उदय के थे जो इस प्रकार थे :-

(i) **मध्यम वर्ग का आन्दोलन** :- 1918 में सेडीशन कमेटी (Sedition Committee) की रिपोर्ट में कहा गया था कि क्रांतिकारी आन्दोलन का प्रारंभ सबसे पहले बंगाल के मध्यम श्रेणी के पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त नवयुवकों से हुआ।

(ii) **भारतीयों में आर्थिक असंतोष** :- शिक्षित नवयुवक, बेकारी, नौकरियों में जातीय भेदभाव, उद्योग धन्धों के पतन आदि से परेशान थे जो अंग्रेजों की नीति का ही परिणाम थी। अतः इसका विरोध वह हिंसात्मक उपायों से प्रकट करना चाहते थे।

(iii) **लॉर्ड कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीति** :- लॉर्ड कर्जन के कार्यों ने क्रांतिकारी आन्दोलन को जन्म दिया जैसे कलकत्ता कारपोरेशन एक्ट, यूनिवर्सिटी एक्ट, सरकारी गोपनीयता एक्ट, बंगाल का विभाजन, भारतीयों को उच्च पदों से अलग रखना तथा कर्जन का जातीय अहंकार इत्यादि।

(iv) **दमन के विरुद्ध प्रतिक्रिया** :- उग्रवादियों ने सरकार की नीतियों का विरोध करने और अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए बहिष्कार, स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा आदि जैसे अहिंसक साधनों को अपनाया था, परन्तु इसके बावजूद भी सरकार ने उग्रवादियों का दमन किया। इसके फलस्वरूप नवयुवकों ने न्याय का मुकाबला करने के लिए हिंसा का सहारा लिया।

(v) **राष्ट्रीय प्रतिशोध** :- अंग्रेजी शासन के अत्याचारों, कर्जन की प्रतिगामी नीतियों, देशभक्तों और राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेनेवाले भद्र पुरुषों पर अमानवीय प्रहार आदि ने युवकों को राष्ट्रीय प्रतिशोध लेने के लिए बाध्य कर दिया।

(vi) **पश्चिम की क्रांति का प्रभाव** :- पश्चिम में फ्रांस, इटली, जर्मनी, अमेरिका और आयरलैण्ड की क्रांतियों ने नवयुवकों को सिखाया कि आजादी की कीमत खून से चुकानी पड़ती है।

(VII) **उदारवादियों के संवैधानिक साधनों की असफलता** :- उदारवादियों के संवैधानिक साधनों — प्रार्थना, प्रस्ताव, प्रचार, शिष्ट मंडल की असफलता ने भी नवयुवकों को हिंसा का सहारा लेने के लिए बाध्य किया।

उपर्युक्त कारणों से आजादी के दिवाने पिस्तौल, बन्दूक, बम आदि लेकर देश की आजादी के लिए घर छोड़कर निकल पड़े और आजादी के लिए अपना सब कुछ न्योछावर करके अपने को धन्य मानने लगे।

क्रांतिकारी आन्दोलन की प्रगति :- महाराष्ट्र में क्रांतिकारी आन्दोलन का प्रारंभ हुआ और बंगाल इनका प्रधान केन्द्र बन गया। पंजाब और मद्रास में भी क्रांतिकारी गतिविधियाँ तीव्र हो गई थी। विदेशों में भी भारतीय स्वतंत्रता की प्राप्ति हेतु क्रांतिकारी कार्य किए गए। महाराष्ट्र में क्रांतिकारी आन्दोलन के संचालक श्याम जी कृष्ण वर्मा, सावरकर बन्धु, चापेकर बन्धु आदि थे। 1899 में रैण्ड एवं आर्मस्ट की हत्या से आतंकवाद का जन्म हुआ। 1909 में अहमदाबाद में लार्ड और लेडी मिण्टो जिस गाड़ी से शहर में घूम रहे थे, उसे उड़ाने का प्रयत्न किया गया था। वीरेन्द्र घोष तथा भूपेन्द्र नाथ दत्त बंगाल के प्रसिद्ध क्रांतिकारी थे। 1907 में मिदनापुर के निकट उपगवर्नर की गाड़ी को बम से उड़ा देने का प्रयत्न किया गया तथा ढाका जिला में जिलाधीश को गोली से उड़ा देने का प्रयत्न किया गया। पंजाब में सरदार अजीत सिंह, भाई परमानन्द तथा लाला हरदयाल ने क्रांतिकारियों का संगठन किया। लन्दन में इंडिया हाउस से क्रांतिकारी आन्दोलन चलाया गया। श्याम जी कृष्ण वर्मा तथा विनायक सावरकर ने लन्दन से ही गतिविधियाँ संचालित की।

क्रान्तिकारी आन्दोलन की असफलता के कारण (Causes of the failure of Revolutionary Movement) :-

(i) **केन्द्रीय संगठन का अभाव (lack of central organization)** :- यद्यपि भारत में समय-समय पर क्रांतिकारी संगठन स्थापित हुए, परन्तु उनका कार्यक्षेत्र कुछ प्रान्तों तक ही सीमित रहा। राष्ट्रीय आधार पर सही तालमेल न होने के कारण आन्दोलन सफल नहीं हो सका इस प्रकार सरकार उसे दबाने में सफल हो गई।

(ii) **आन्दोलन का युवकों तक ही सीमित होना (Movement was limited to youth)** :- आन्दोलन शिक्षित युवकों तक ही सीमित रहा जिसके कारण साधारण जनता का विश्वास प्राप्त न हो सका। इसके अलावा मध्यवर्ग तथा राष्ट्रीय आन्दोलन के नेताओं का भी सहानुभूति प्राप्त न हो सका। क्रांतिकारी कार्यों को घृणा करते थे क्योंकि उनका विश्वास वैधानिक साधनों में था।

(iii) **शस्त्रों की प्राप्ति में भी कठिनाई (Difficulties in getting the arms)** :- भारतीय क्रांतिकारियों को शस्त्र मिलने में कठिनाई होती थी उन्हें चोरी-छिपे शस्त्र विदेशों से मँगाने पड़ते थे। अपने से भी शस्त्र बनाने में धन का अभाव था जिसके कारण क्रांतिकारी आन्दोलन सफल नहीं हो सका।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

(iv) ब्रिटिश सरकार की दमन नीति (Repressive Policy of the British Government) :- ब्रिटिश सरकार ने उग्रवादियों तथा क्रांतिकारियों के प्रति कठोर दमन की नीति अपनायी। 1907 में सभाओं पर रोक तथा 1908 में विद्रोह सभा कानून पास करके सरकारी पदाधिकारियों को विशेषाधिकार दे दिये। विशेषाधिकार से सभाओं पर रोक एवं उल्लंघन करने पर कठोर दण्ड की व्यवस्था कर दी गई। 1908 से 1910 तक 'प्रेस कानून' पास करके समाचार पत्रों पर भी रोक लगा दी। तथा क्रांतिकारी होने के शक के संदेह पर कठोर दण्ड किया जाता था जिसके कारण साधारण व्यक्ति क्रांतिकारी बनने से डरता था।

(v) महात्मा गाँधी द्वारा आन्दोलन (Movement by Mahatma Gandhi) :- 1919 के बाद कांग्रेस पर महात्मा गाँधी का प्रभुत्व हो गया उन्होंने अहिंसा एवं असहयोग आन्दोलन चलाकर जनता को अपनी ओर आकर्षित कर लिया तब जनता में एक विश्वास उभर आया कि इन साधनों से स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है।

(vi) क्रान्तिकारियों के प्रति कांग्रेस की उदासीनता (Indifference of Congress towards the Revolutionaries) :- 1885 में भारत की सबसे प्रभावशाली संस्था भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस थी. लेकिन कांग्रेस की उदासीनता के कारण क्रांतिकारियों को इस संस्था की सहानुभूति प्राप्त होना तो दूर रहा उन्हें इस संस्था से आलोचना और विरोध ही प्राप्त हुआ। जिसके कारण जन समर्थन का अभाव भी रहा और ब्रिटिश शासन द्वारा कठोर दमनात्मक नीति भी हावी रहा। जिसके कारण क्रांति सफल नहीं हो सका।

निष्कर्षतः उपरोक्त कारणों से क्रांतिकारियों को सफलता नहीं मिल सकी। एक ओर क्रांतिकारियों में एकजुटता तथा डर का अभाव था तो दूसरी ओर अंग्रेज क्रांतिकारियों के नीति को कुचलने के लिए दमन नीति जोर पकड़ते जा रहा था। लेकिन फिर भी क्रांतिकारी आंदोलन अंग्रेजों की नीति को झकझोर तो अवश्य दिया। अंग्रेज भारतीय जनता को कुछ न कुछ राजनीतिक अधिकार दिये जाते रहे ताकि कांग्रेस और वैधानिक आंदोलन से विश्वास उठ न जाय।

(समाप्त)

डॉ० राजू मोची
विभागाध्यक्ष - राजनीति विज्ञान
डी.के. कालेज, डुमरांव
दिनांक 08/08/2020

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA